प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा

सरदार पटेल विश्वविद्यालय,

वल्लभ विद्यानगर

एम.एड. उपाधि हेतु प्रस्तुत

शोध-प्रबंध

शोधार्थी
कुसुम पी. जोशी

शोध निर्देशिका
डा. भारती राठौर
सहायक प्राध्यापक
वे.मेड शिक्षा महाविद्यालय
वल्लभ विद्यानगर
आणंद (गुजरात)

सरदार पटेल विश्वविद्यालय

वल्लभ विद्यानगर-३८८ १२०

वर्ष २०१४-१५

सरदार पटेल विश्वविद्यालय

वे-मेड शिक्षा महाविद्यालय

वल्लभ विद्यानगर-३८८ १२०

आणन्द (गुजरात)

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि **कुसुम पी. जोशी** ने मेरे मार्गदर्शन में एम.एड. हेतु अपना शोध प्रबन्ध **"प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा"** विधिवत रूप से सम्पन्न किया हैं ।

इस शोध कार्य के लिए इन्होंने उपलब्ध आवश्यक सामग्री का संकलन स्वयं किया हैं और यह शोध-कार्य नितान्त मौलिक हैं । यह लघुशोध-निबंध हर दृष्टि से परीक्षण हेतु प्रस्तुत करने योग्य है । मैं इसके परीक्षण की संस्तुति करती हूँ ।

तिथि :

स्थान : आणन्द (गुजरात)

डा. भारती राठौर

शोध निर्देशिका

घोषणा–पत्र

मैं घोषणा करती हूँ कि एम.एड. उपाधि हेतु **"प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा"** शीर्षक से प्रस्तुत यह लघुशोध–निबंध डॉ. भारती राठौर सहायक प्राध्यापक, सरदार पटेल विश्वविद्यालय वे–मेड शिक्षा महाविद्यालय आणन्द (गुजरात) के मार्गदर्शन में लिखा गया है ।

यह मेरा पूर्णतया मौलिक शोधकार्य हैं । जहाँ तक मुझे ज्ञात हैं – उपयुक्त शोध विषय पर अन्य किसी विश्वविद्यालय में शोधकार्य नहीं हुआ हैं ।

दिनांक :

स्थान : आणन्द (गुजरात) **कुसुम पी. जोशी**

वल्लभ विद्यानगर शोधार्थी

प्रमाणपत्र

प्रमाणित किया जाता है कि कुसुम पी. जोशी ने उनकी शोध निर्देशिका के निदर्शन में एम.एड्. उपाधि हेतु वे.मेड.शिक्षा महाविद्यालय सरदार पटेल विश्वविद्यालय वल्लभ विद्यानगर से आवश्यकता अनुसार लघुशोध-निबंध पूर्ण किया है ।

विषय : प्रेमचन्द की कहानियों में निहित शिक्षा

शोधार्थी :

कुसुम पी. जोशी

शोध निर्देशिका :

डॉ. भारती राठोर

दिनांक :

प्राचार्य (निर्देशिका)

वे मेड शिक्षा महाविद्यालय

आभार

प्रस्तुत लघुशोध-निबंध शोधार्थी ने शोध एम.एड, उपाधि की पूर्ति हेतु सरदार पटेल विश्वविद्यालय, वल्लभ विद्यानगर आणंद (गुजरात) को प्रस्तुत किया है । इस अध्याय को पूर्ण करने के लिए कई विशिष्ट गुरुजनों का सहयोग मिला हैं ।

अत: उनके प्रति आभार प्रदर्शन करना में अपना परम कर्तव्य समझती हूँ ।

प्रस्तुत लघुशोध-निबंध को समय पर पूर्ण करने का श्रेय पूजनीय निर्देशिका डा. भारती राठौर को है । जिनके विद्धतापूर्ण मार्गदर्शन एवं सुक्ष्म प्रर्यवेक्षण से यह लघुशोध-निबंध पूर्ण हुआ। वस्तुत: शोध प्रबन्ध उनके निरन्तर पथ प्रदर्शक एवं सक्रिय सहयोग का ही परिणाम है कि मैं अपने व्यस्त जीवन के अमूल्य क्षणों में से इस कार्य को पूर्ण कर सकी हूँ । मैं अपनी संस्था की प्राचार्या (निर्देशक) ममता की प्रतिमूर्ति परम पूज्यनीय डा. सुलभा नटराज के प्रति कृतज्ञ एवं श्रद्धा अभिभूत हूँ, जिनके स्नेही व्यवहार ने मुझे यह शोधकार्य करने हेतु सदैव प्रोत्साहित किया ।

मैं अपने प्राध्यापकों डॉ. रुचा देसाई, डॉ. शीतल हैलया, डॉ. दिपाली गाँधी, डॉ. चिराग दरजी का श्रद्धाभिमुक्त प्रणति निवेदन करती हूँ । जिनके स्नेहिल व्यवहार और तत्वशोधी दृष्टिकोण ने मुझे शोध कार्य करने हेतु तत्पर किया ।

मैं अपने पिता जी श्री रामलालजी जोशी व माताजी श्रीमती राधा जोशी का आभार किन शब्दों में अभिव्यक्त करुं ? इस कठिन साधना में मेरे माताजी व पिताजी का वात्सल्य प्रेम मेरे पर सदा रहा है । अपने माता-पिता के चरण कमल में शुभ भावना के साथ सदैव श्रद्धापूर्ण विनत हूँ ।

मेरे पिता समान ससुर गौरीशंकर जी. जोशी व माताजी शान्ताबहन जोशी व परिवार के अन्य सदस्यों के प्रति कृतज्ञ हूँ । जिन्हों ने अपना अमूल्य समय व सहयोग प्रेरणा देकर मुझे शोध कार्य करने को तत्पर बनाया ।

इस लघुशोध-निबंध को पूर्ण करने में सबसे बड़ा योगदान मेरे जीवन साथी पुष्कर जी. जोशी का है । मैं उनका हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग के बिना मेरे कार्य कदापि पूर्ण न हो पाता अत: मेरे शोध कार्य को पूर्ण करने में इनका अविस्मरणीय योगदान हैं। मैं मेरे पुत्र ध्रुव को प्यार भरा धन्यवाद और आर्शीवाद देती हूँ । जिसने मेरी व्यस्तता में किसी भी प्रकार की बाधा नहीं पहुँचायी और मेरे शोध-कार्य के समाप्त होने का उत्सुक्ता से प्रतीक्षा करता रहा ।

इस शोधयात्रा में डा. नवनीत चौहान (साहब) आचार्य हिन्दी विभाग, सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर का समय समय पर सहयोग मिलता रहा । अत: इस अवसर पर मैं उनकी विशेष आभारी हूँ । अब में ईश्वर को धन्यवाद देती हुए उन सभी महानुभवों सहपाढियों के प्रति कृतज्ञ हूँ ।

उन्होंने अपना अमूल्य समय व सहयोग देकर मेरे इस शोध कार्य को पूर्ण होनें में सहयोग प्रदान किया हैं । विशेषकर रजनीकांत वानिया के प्रति कृतज्ञ हूँ ।

अन्त में मैं कल्पेशभाई का भी सहृदय आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होने मेरा शोध प्रबन्ध तत्परता के साथ शुद्ध एवं स्वच्छ टंकित किया ।

दिनांक :

कुसुम जोशी

शोधार्थी

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रम	शीर्षक	पृष्ठ क्रमांक
१.	विषय प्रवेश : प्रस्तावना	१–१८
	समस्या कथन	१९–२१
२.	संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन	२२–४७
३.	संशोधन योजना	४८–५१
४.	प्रदत वर्गीकरण विश्लेषण एवं व्याख्या	५२–७७
५.	संशोधन सारांश, निष्कर्ष एवं सुझाव	७८–८२
*	उपसंहार	८३
*	संदर्भ सूची	८४–८५